Topic 48 जुहोत्यादिगणीय आकारान्त धातुएँ

जहातेश्च ।

इद्वा स्याद्धलादौ क्ङिति सार्वधातुके। जहितः

हलादि कित्-ङित् सार्वधातुक परे होने पर 'हा' धातु के स्थान में विकल्प से इकार आदेश होता है। 'अलोऽन्त्यस्य' परिभाषा से यह आदेश 'हा' के अन्त्य वर्ण - आकार के ही स्थान पर होता है। उदाहरण के लिए लट् लकार के प्रथम पुरुष - द्विवचन में 'हा' धातु से तस्, शप् - श्लु और द्वित्व आदि कार्य होकर 'ज हा तस्' रूप बनता है। यहाँ 'सार्वधातुकमपित्' से 'तस्' के ङित् होने के कारण प्रकृत सूत्र से 'हा' धातु के आकार के स्थान पर इकार होकर 'ज हि तस्' = 'जहितः' रूप सिद्ध होता है। अभाव-पक्ष में अग्रिम सूत्र प्रवृत्त होता है।

ई हल्यघोः ।

श्नाभ्यस्तयोरात ईत् स्यात् सार्वधातुके क्ङिति हलि, न तु घोः। जहीतः।

श्नाभ्यस्तयोरातः ।

अनयोरातो लोपः क्ङिति सार्वधातुके। जहति। जहौ। हाता। हास्यति। जहातु, जहितात्, जहीतात्।

आ च हौ ।

जहातेर्हौ परे आ स्याच्चादिदीतौ। जहाहि, जहिहि, जहीहि। अजहात्। अजहीताम्। अजहुः

लोपो यि ।

जहातेश्च लोपो यादौ सार्वधातुके । जह्यात् । एलिङि । हेयात् । अहासीत् । अहास्यत् । माङ् माने शब्दे च ।

भृञामित् ।

भृञ्, माङ्, ओहाङ् - एषां त्रयाणामभ्यासस्य इत् स्यात् श्लौ । मिमीते । मिमाते । मिमते । ममे । माता । मास्यते । मिमीताम् । अमिमीत । मिमीत । मासीष्ट । अमास्त । ओहाङ् गतौ । जिहीते । जिहाते । जिहते । जहे । हाता । हास्यते । जिहीताम् । अजिहीत । जिहीत । हासीष्ट । अहास्त । अहास्यत । डुभृञ् धारणपोषणयोः । बिभर्ति । बिभृतः । बिभ्रति । बिभृते । बिभ्राते । बिभ्रते । बिभरांचकार, बभार । बिभर्थ । बभर्थ । बभृव । बिभरांचक्रे, बभ्रे । भर्ता । भरिष्यति । बिभर्तु । बिभराणि । बिभृताम् । अबिभः । अबिभृताम् । अबिभरुः । बिभृयात् । बिभ्रीत । भ्रियात्, भृषीष्ट । अभार्षीत् । अभृत । अभरिष्यत्, अभरिष्यत । डुदाञ् दाने । ददाति । दत्तः । ददति । दत्ते । ददाते । ददते । ददौ, ददे । दाता । दास्यति, दास्यते । ददातु ।

श्लु के विषय में 'भृञ्' आदि तीन धातुओं के अभ्यास के स्थान पर इकार आदेश होता है । अलोऽन्त्यस्य । परिभाषा से यह इकार अभ्यास के अन्त्य वर्ण के ही स्थान पर होता है । भृञ्, माङ् और ओहाङ् - ये तीन 'भृञ्' आदि धातुएँ हैं । अतः इनके अभ्यास के अन्त्य वर्ण के स्थान पर इकार आदेश होता है । उदाहरण के लिए लट् लकार के प्रथमपुरुष एकवचन में 'मा' धातु से आत्मनेपद प्रत्यय 'त', शप्-श्लु और द्वित्व आदि होकर 'मा मा त' रूप बनता है । इस स्थिति में इत्व ...

विकल्प होने के कारण प्रकृत सूत्र से 'मा' के अभ्यास के अन्त्य वर्ण - आकार के स्थान पर इकार होकर 'मइ मात' रूप बनेगा। पश्चात् ईकार और 'त' को 'ति' के स्थान पर एकार होकर 'म्‌ इ म्‌ ई त्‌ ए' 'मिमीते' रूप सिद्ध होता है।